डॉ राजीव कुमार,

इतिहास विभाग,

एच डी जैन कॉलेज, आरा

# * हड़प्पा सभ्यता का आर्थिक जीवन *

---

हड़प्पा अथवा मोहनजोदड़ो की सभ्यता विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है। यह सभ्यता अपने समकालीन अन्य सभ्यताओं से कहीं अधिक विकसित थी। यह सभ्यता 2500 ई.पू से 1750 ई.पू के बीच में अस्तित्व में रही थी। विकसित अवस्था में होने का सबसे प्रमुख कारण यह था कि हड़प्पा संस्कृति के लोगों का आर्थिक जीवन अत्यंत विकसित, बेहद संगठित और बहुआयामी था। कृषि, उद्योग, व्यापार और मुद्रा व्यवस्था पर आधारित यह एक सुदृढ़ अर्थव्यवस्था थी।

## 1. कृषि -

---

* कृषि, हड़प्पा वासियों का प्रमुख आर्थिक आधार था।

* हड़प्पा सभ्यता की भूमि सिंधु और उसकी सहायक नदियों के कारण बेहद उपजाऊ थी।

* गेहूं, जौ, बाजरा, तिल, सरसों और कुछ अन्य स्थानों पर चावल और कपास की भी खेती होती थी।

* कपास की कृषि सर्वप्रथम हड़प्पा सभ्यता के लोगों ने ही की थी। विश्व की सबसे प्राचीन कपास की कृषि के प्रमाण यहीं से मिले हैं।

* सिंचाई के लिए नहरें, कुएं और  जलाशयों का प्रयोग किया करते थे। लोथल और धोलावीरा से इसके प्रमाण मिले हैं।

2. पशुपालन (Animal Husbandry)

---

* गाय, बैल, बकरी, सूअर, हाथी, ऊंट और कुत्ते जैसे पशु पाले जाते थे।

* पशु न केवल कृषि में उपयोग में ले जाते थे, बल्कि दूध, मांस, चमड़ा और परिवहन के लिए भी महत्वपूर्ण थे।

* कुछ स्थलों से घोड़े के अवशेष भी मिले हैं, यद्यपि यह विवादास्पद है।

3. उद्योग और शिल्प (Industry and Craftsmanship) :

---

* हड़प्पा वासी कुशल शिल्पकार थे।

* मृदभांड (Pottery): लाल मिट्टी के के बर्तनों पर काले रंग की सुंदर चित्रकारी मिलती है।

* धातु उद्योग : तांबा, कांसा, सोना, चांदी आदि धातुओं से औजार, आभूषण और मूर्तियां बनाई जाती थी।

* मणि मोती उद्योग : कार्नेलियन, अगेट, लैपिस लाजुली जैसी कीमती पत्थरों से मनके बनाए जाते थे।

* कपड़ा उद्योग : कपास से वस्त्र बनाने का कार्य होता था। सूती वस्त्रों के अवशेष हमें मोहनजोदड़ो से मिले हैं।

* मुद्राएं (Seals) : यह व्यापारिक लेन-देन के लिए प्रयुक्त होती थी और उन पर उभरी हुई लिपि या पशु आकृतियां बनी हुई है।

4. व्यापार एवं वाणिज्य (Trade and Commerce) :

---

* आंतरिक और बाह्य व्यापार दोनों अत्यंत विकसित थे।

* आंतरिक व्यापार नगरों और ग्रामों के बीच अनाज, धातु, मिट्टी के बर्तन, कपड़े आदि के रूप में होता था।

* बाह्य व्यापार के प्रमाण मेसोपोटामिया, फारस, बहरीन और ओमान से मिले हैं।

* मेसोपोटामिया के अभिलेखों में 'मेलुह्हा' नमक देश का उल्लेख है, जिसे अधिकांश विद्वान सिंधु सभ्यता से जोड़ते हैं।

* व्यापार स्थल और समुद्र मार्ग दोनों से होता था। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए लोथल एक प्रमुख बंदरगाह था।

5. मुद्रा और विनिमय प्रणाली (Currency and Exchange System) :

---

* हड़प्पा सभ्यता में सिक्कों का प्रयोग नहीं था।

* लेन-देन वस्तु-विनिमय प्रणाली पर आधारित थी।

* व्यापारिक वस्तुओं की पहचान और प्रमाणिकता हेतु मुद्राओं (Seals) का उपयोग होता था।

6. नगरीय अर्थव्यवस्था (Urban Economy)

---

* नगर नियोजन व्यापारिक गोदाम, अनाज कोष (ग्रेनरी) और बंदरगाह जैसे आर्थिक संस्थान विकसित थे।

* नगरों में रहने वाले लोग विभिन्न शिल्पों और व्यापार से जुड़े थे, जिससे एक सुव्यवस्थित श्रम-विभाजन (Division of Labour) विकसित हुआ था।

7. आर्थिक संगठन और शासन का प्रभाव :

---

* अर्थव्यवस्था पर एक केंद्रीय प्राधिकरण का नियंत्रण प्रतीत होता है। संभवत: कोई नगर प्रशासन या पुजारी वर्ग मौजूद थे।

* समान वजन-माप की पद्धति से आर्थिक व्यवस्था में स्थिरता और निष्पक्षता सुनिश्चित होती थी।

निष्कर्ष (Conclusion) :

---

हड़प्पा सभ्यता का आर्थिक जीवन अत्यंत समृद्ध, संगठित और बहु-आयामी था। कृषि इसका आधार थी, लेकिन उद्योग और व्यापार ने इसे एक विकसित नगरीय अर्थव्यवस्था का रूप प्रदान किया था। स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक संबंध, शिल्पकला की उन्नति तथा समान वजन-प्रणाली इसके उन्नत आर्थिक ढांचे का प्रमाण है। इस तरह हम कह सकते हैं कि हड़प्पा की सभ्यता ने प्राचीन भारत की आर्थिक परंपराओं की नींव डाली थी।

---